3 सर्जन्स ऑफ इंडिया का 28वां आयोजन

5 उच्च कोटि के अर्थशास्त्री रहे हैं चिदंबरम

7 दुष्कर्म का आरोपी 36 घंटे में गिरफ्तार

RNI-MPBIL/2011/39805

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 15 अंक : 48 प्रति सोमवार, 7 अप्रैल 2025 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की मन की बात में छिंदवाड़ा मॉडल की तारीफ

▪ कमलनाथ जैसा विजन और मिशन सब नेताओं में हो तो बदल जायेगी देश की तस्वीर

कवर स्टोरी

-विजया पाठक

एडिटर

छिंदवाड़ा से 24 किमी दूर स्थित ग्राम राजाखोह आज चर्चा में है। क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में इस गांव की महिलाओं के कार्य की सराहना की है। महिलाओं द्वारा महुआ का प्रयोग कुछ ऐसा किया गया कि अब यह इस गांव की पहचान बन गया है। छिंदवाड़ा की चार बहनों ने महुआ के फूलों से कुकीज बनाने की अनूठी पहल शुरू की, जो अब पूरे देश में लोकप्रिय हो रही है। इस गांव की महिलाओं ने अपने पारंपरिक कार्य को अपनी पहचान ना बनाते हुए कुछ अलग करने की ठानी। पीएम ने राजाखोह गांव की महिलाओं के स्टार्टअप की सराहना की। इन बहिनों को स्टार्टअप की प्रेरणा कमलनाथ के छिंदवाड़ा मॉडल से मिली। क्योंकि कमलनाथ के मॉडल में ऐसे ही स्टार्टअप की प्रेरणा मिलती है। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, कुछ फूल मंदिरों की शोभा बढ़ाते हैं, कुछ खुशबू बनकर बिखरते हैं, लेकिन राजाखोह की इन बहनों ने महुआ के फूलों को स्वादिष्ट कुकीज का रूप दिया है। यह पहल पूरे देश में सराही जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस पहल को महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का बेहतरीन उदाहरण बताते हुए कहा, अगर कुछ नया करने की जिद हो तो पारंपरिक संसाधनों से भी बड़ा उद्यम खड़ा किया जा सकता है। यह स्टार्टअप इस बात का प्रमाण है कि सही सोच और मेहनत से स्थानीय संसाधनों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग किया जा सकता है। (शेष पेज 6 पर)

मध्यप्रदेश सरकार ने प्रदेश के ओलंपिक सितारे के साथ किया दुर्व्यवहार

▪ पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने उठाई ओलंपिक खिलाड़ी विवेक सागर के पक्ष में आवाज, साधा डॉ. मोहन यादव सरकार पर निशाना

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता कमलनाथ ने एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी की सरकार को घेरा है। दरअसल इस बार कमलनाथ ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा खिलाड़ियों के साथ किये जा रहे दुर्व्यवहार को लेकर हुंकार भरी है। कमलनाथ ने सीधे तौर पर डॉ. मोहन यादव की सरकार को झूठा करार देते हुए कहा कि मोहन सरकार की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया है। (शेष पेज 2 पर)

आरएसएस ने संजय जोशी के नाम पर लगाई मुहर, मिल सकती है भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी

▪ क्या शिवराज, वसुंधरा को पीछे छोड़ पार्टी के शीर्ष पद आसीन होंगे संजय जोशी?

-विजया पाठक

भाजपा पिछले एक वर्ष से अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया में जुटी हुई है। लगभग एक वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद अभी भी यह तय नहीं हो पा रहा है कि भाजपा का अगला राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन होगा। विशेषज्ञों के अनुसार पहले दिन राष्ट्रीय अध्यक्ष के जिन नामों शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे और संजय जोशी को राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से जोड़कर देखा जा रहा है। उस नाम से पर्दा कब उठेगा अभी कह पाना संभव नहीं। हालांकि विश्वस्त सूत्रों के अनुसार भाजपा आगामी 06 अप्रैल को पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के नाम से पर्दा उठाने की तैयारी में है। चर्चा इस बात को लेकर है कि इस बार पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष संघ के मर्जीनुसार बनाने पर मुहर लग सकती है। हालांकि कुछ वरिष्ठ संघ कार्यकर्ताओं ने इशारों में संजय जोशी का नाम घोषित किये जाने को लेकर अपनी सहमति भी जताई है। ऐसे में यह माना जा रहा है कि भाजपा का अगला राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनैतिक पार्टी नहीं बल्कि संगठन का कार्यकर्ता होगा। (शेष पेज 2 पर)

जोशी के पार्टी अध्यक्ष बनने से संघ और संगठन सहित पार्टी को मिलेगी मजबूती

राज्य में व्यापारिक समूहों को प्रोत्साहन देने और औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ाने छत्तीसगढ़ सरकार ने उठाया महत्वपूर्ण कदम

-विजया पाठक

राज्य की जनता के कल्याण और उनके जीवन को खुशहाल बनाने के ध्येय के साथ कार्य कर रहे छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने एक और जनता के हित में बड़ा कदम बढ़ाया है। दरअसल साय सरकार राज्य में उद्योग और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ में साय सरकार ने प्रदेश के छोटे व्यापारियों और मध्यमवर्गीय परिवारों को राहत पहुंचाने के लिए दो अहम निर्णय लागू किए हैं, जो 01 अप्रैल 2025 से प्रभावी हो चुके हैं। वित्तमंत्री ओपी चौधरी के दिशानिर्देश पर इन निर्णयों को वर्ष 2025-26 के बजट में शामिल किया गया था। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश की जनता की समस्याओं को समझते हुए लगातार ऐसे निर्णय ले रही है जो सार्थक, जनहितकारी और दूरदर्शिता से परिपूर्ण हों। व्यापारी वर्ग को सहूलियत और आम जनता को राहत देने के ये निर्णय प्रदेश के आर्थिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होंगे। (शेष पेज 3 पर)

आरएसएस ने संजय जोशी के नाम पर लगाई मुहर, मिल सकती है भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी

(पेज 1 से जारी)

इससे एक ओर जहां भाजपा और संघ के तनावपूर्ण रिश्तों में सुधार आयेगा वहीं दूसरी ओर संगठन के कुशल कार्य अनुभव का फायदा पार्टी को मिलेगा।

लंबे समय से मुख्य धारा से दूर रहे हैं जोशी

अगर भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर पूर्व संगठन मंत्री संजय जोशी को चुनती है तो 18 साल से चल रहा जोशी का वनवास खत्म हो जाएगा। आरएसएस ने 21 से 23 मार्च तक तीन दिन बेंगलुरु में हुई प्रतिनिधि सभा की बैठक में वर्तमान भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के जरिये कथित पार्टी हाईकमान (गुजरात लॉबी) को संदेश दे दिया था कि अब कोई डमी नाम अथवा अन्य बहाना नहीं चलेगा। इससे साफ हो जाता है कि नव संवत्सर में राम नवमी के बाद भाजपा को नया अध्यक्ष मिल जाएगा, ऐसे में यह भी जाहिर है कि नाम पर निर्णय से पहले संघ प्रमुख और पीएम नरेंद्र मोदी के बीच संवाद जरूरी है, जो वर्षों से बाधित है। इसी दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में संजय जोशी के नाम पर भी सहमति बनने की उम्मीद जताई जा रही है। हालांकि यह संदेश मिलने के बाद से भाजपा में आंतरिक खलबली मची है।

पहली बार संघ कार्यालय पहुंचे मोदी

नागपुर में संघ मुख्यालय पर प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी का 30 मार्च को पहुंचना पहली ऐसी घटना है जो संघ के इतिहास में दर्ज हुई, हालांकि वह माधव नेत्र चिकित्सालय के शिलान्यास समेत विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया, लेकिन संघ के नजदीकी सूत्र बताते हैं कि इसी दौरान मोदी और जोशी की मुलाकात भी हुई है। यदि दोनों पुराने घनिष्ठ फिर मिले तो उनके बीच दो दशक से चल रही कड़वाहट के दूर होने का फायदा निश्चित तौर पर भाजपा को मिलेगा। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि दरअसल ढाई दशक पूर्व 'मोदी और जोशी' की जोड़ी या यूं कहें, गहरी दोस्ती की नींव तब हिल गई थी जब वर्ष 2000 में गुजरात के सीएम केशु भाई पटेल बने। इस दौरान पार्टी के निर्देश पर दोनों को गुजरात से बाहर होना पड़ा था, लेकिन मोदी दो साल के भीतर ही दिल्ली से ताकतवर होकर लौटे तो सीएम की कुर्सी पर काबिज हो गए, यहां से उतरे तो दिल्ली के तख्त पर बैठ गए।

संघ का बढ़ेगा वर्चस्व

संघ अपनी स्थापना के 100 वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। ऐसे में अगर पार्टी ने जोशी को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना तो निश्चित ही यह संघ की जीत होगी और इससे पार्टी में संघ का वर्चस्व और बढ़ेगा। जाहिर है कि जोशी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए चुने जाने का फायदा कहीं न कहीं पार्टी को मिलेगा। पार्टी कार्यकर्ता संघ की कार्यशैली से परिचित होंगे और संगठनात्मक शक्ति को मजबूती मिलेगी।

लंबे समय से राजनीतिक वनवास

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक प्रचारक संजय जोशी का नाम अचानक भाजपा अध्यक्ष पद के लिए उभरकर आया है। यह एक संयोग है या फिर किसी खास रणनीति का हिस्सा, इस पर फिलहाल अटकलें ही चल रही हैं। लेकिन भाजपा की वर्तमान राजनीति में यह नाम निश्चित ही चौंकाने वाला है। ऐसा नहीं है कि जोशी इस पद के योग्य नहीं है, उनकी गिनती कुशल संगठकों में होती हैं।

भाजपा को बहुत अच्छे से समझते हैं जोशी

मैकेनिकल इंजीनियर की डिग्री वाले 62 वर्षीय संजय जोशी भाजपा के मैकेनिज्म को भी बखूबी समझते हैं। वे संघ के पूर्वकालिक प्रचारक हैं। 1989-90 में संजय जोशी को आरएसएस ने संगठन को मजबूत करने के लिए गुजरात भेजा था। उस समय उन्हें संगठन मंत्री का पद दिया गया था, जबकि नरेन्द्र मोदी संगठन मंत्री के रूप पहले से ही काम कर रहे थे। दोनों ने ही मिलकर पार्टी को मजबूत किया और 1995 में भाजपा ने पहली बार गुजरात में सरकार बनाई। उस समय मुख्यमंत्री पद के लिए मोदी और जोशी का नाम भी चला था, लेकिन दावेदारी में दोनों पिछड़ गए। इसी बीच मोदी को दिल्ली भेज दिया गया और जोशी संगठन महामंत्री बन गए। इसके साथ ही गुजरात में उनका दबदबा भी बढ़ गया।

मध्यप्रदेश सरकार ने प्रदेश के ओलंपिक सितारे के साथ किया दुर्व्यवहार

(पेज 1 से जारी)

कमलनाथ ने सोशल मीडिया पर टिप्पणी लिखते हुए कहा कि भाजपा सरकार की कथनी और करनी में कितना बड़ा अंतर है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है ओलंपिक खिलाड़ी विवेक सागर को दी जाने वाली इनामी राशि से दूर रखना। कमलनाथ ने कहा कि भाजपा सरकार ने ओलंपिक खेलों में दो बार मेडल जीतकर लाने वाले मध्यप्रदेश के खिलाड़ी विवेक सागर के साथ विश्वासघात किया है। यह उनका और उनके खेल का अपमान है। प्रदेश सरकार ने अभी तक उन्हें दी जाने वाली 75 लाख रुपये की ईनामी राशि अब तक नहीं दी। इसके साथ ही प्रदेश के खेल विभाग पर भी सवाल उठ रहे हैं। यहां खेल मंत्री विश्वास सारंग की कार्यप्रणाली भी संदेह के घेरे में है। क्यों ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी के साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है। यदि खिलाड़ियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता रहा तो निश्चित ही खिलाड़ी अपने प्रदेश से पलायन करने को मजबूर होंगे।

मोहन सरकार में जमीनी हकीकत कुछ और ही है

कमलनाथ ने मोहन सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि प्रदेश में शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य के स्तर को भी बेहतर करने पर भी काम नहीं किया जा रहा है। स्कूलों में न बच्चों के पास पढ़ने के लिए किताबें हैं, न ही पढ़ाने के लिए शिक्षक, इतना ही नहीं प्रदेश के कई क्षेत्रों में आज भी लोग बिजली, चिकित्सा सहित मूलभूत सेवाओं के लिए तरस रहे हैं। वहीं खेल के क्षेत्र में भी खिलाड़ियों के साथ धोखा हो रहा है। कमलनाथ ने कहा कि बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि झूठी घोषणाएं करना और फिर उन्हें भूल जाना भाजपा की आदत है। प्रदेश की प्रतिभाओं के साथ सरकार का झूठा व्यवहार शर्मनाक है।

जनता के हित के लिए आवाज उठाते हैं कमलनाथ

यह कमलनाथ की सक्रियता का ही परिणाम है कि प्रदेश में सत्ता में न रहते हुए भी वे लगातार प्रदेश की जनता की सेवा के कार्य में जुटे हुए हैं। कमलनाथ भोपाल से लेकर छिंदवाड़ा तक जनता के साथ होने वाले दुर्व्यवहार और शासकीय योजना से वंचित लोगों के पक्ष में आवाज उठाते रहते हैं। नाम न छापने की शर्त पर बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि कमलनाथ प्रदेश की जनता के लिए समय-समय पर आवाज उठाते रहते हैं। लेकिन इस बार उन्होंने प्रदेश सरकार की पोल को खोलकर रख दिया है और मोहन सरकार को शर्मिंदा होने पर मजबूर कर दिया।

खिलाड़ी को नहीं मिला 75 लाख रुपए का ईनाम

कमलनाथ ने ओलंपिक हॉकी में 2021 और 2024 में कांस्य पदक जीतने वाली टीम के सदस्य को घोषित इनाम की राशि नहीं जारी करने को लेकर बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि ओलंपिक हॉकी में कांस्य पदक जीतने वाले विवेक सागर को राज्य सरकार ने अब तक घोषित की गई इनाम राशि ही नहीं दी है। सागर को अब तक सरकार से घोषणा के मुताबिक 75 लाख रुपए मिलने का इंतजार है। मैं मांग करता हूं कि सरकार अपना वादा निभाए और इनाम की शेष राशि का शीघ्र भुगतान करे।

खिलाड़ियों से सच्चा व्यवहार करना चाहिए

सरकार के इस ग़ैर जिम्मेदार व्यवहार से बड़ी संख्या में खेल प्रतिभाओं का प्रदेश से पलायन हो रहा है। पिछले महीने हुए राष्ट्रीय खेलों में प्रदेश मूल के ऐसे 60 खिलाड़ी थे, जिन्होंने दूसरे प्रदेशों की तरफ़ से मेडल जीता। अगर प्रदेश को खेलों में आगे आना है तो खिलाड़ियों से सच्चा व्यवहार करना होगा।

• कुदरगढ़ महोत्सव आस्था, भक्ति और परंपरा का अनूठा संगम

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास योजनाओं के साथ-साथ समावेशी विकास को दिया जा रहा है बढ़ावा: CM विष्णु देव साय

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य सरकार के प्रस्ताव पर इस अंचल के आस्था के प्रमुख केन्द्र कुदरगढ़ मंदिर धाम को केन्द्र सरकार की 'प्रसाद योजना' में शामिल किया है। इससे यहां के विकास के लिए केन्द्र सरकार से मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि कुदरगढ़ महोत्सव आस्था, भक्ति और परंपरा का अनूठा संगम है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सूरजपुर जिले के कुदरगढ़ धाम में चैत्र नवरात्र के अवसर पर आयोजित कुदरगढ़ महोत्सव का समापन समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। मुख्यमंत्री साय ने कुदरगढ़ धाम में बनने वाले रोपवे का भूमिपूजन किया। यह रोपवे दो वर्ष में बनकर तैयार होगा। इस अवसर पर उन्होंने कुदरगढ़ धाम के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण घोषणाएं की। उन्होंने प्रशासनिक भवन एवं सर्व सुविधायुक्त सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 50-50 लाख तथा गढ़वातियां माता मंदिर में सीढ़ी निर्माण और पेयजल व्यवस्था हेतु 50 लाख सहित कुल 01 करोड़ 50 लाख रुपये के निर्माण कार्यों की घोषणा की। इस दौरान रोपवे निर्माण के लिए अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने धाम में चिकित्सालय निर्माण की भी घोषणा की, जिससे श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सके।

105 करोड़ रूपए से अधिक लागत के कार्यों का भूमिपूजन-शिलान्यास

मुख्यमंत्री साय ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए माता कुदरगढ़ी से प्रदेश की सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की और श्रद्धालुओं को चैत्र नवरात्रि की शुभकामनाएं दी। उन्होंने इस अवसर पर 105 करोड़ रूपए से अधिक लागत के 43 विकास कार्यों का भूमि पूजन एवं लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री साय ने भटगांव विधानसभा क्षेत्र के लिए सुशासन रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया, जो राज्य सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करेगा।

मोरमदेव मंदिर हेतु स्वदेश दर्शन योजना में 148 करोड़ रूपए मंजूर

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। राज्य सरकार के प्रस्ताव पर छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध मोरमदेव मंदिर के विकास के लिए भारत सरकार ने स्वदेश दर्शन योजना के तहत 148 करोड़ रूपए की स्वीकृति दी है। प्रदेश की पांच शक्तिपीठों सूरजपुर के कुदरगढ़, चंद्रपुर की चंद्रहासिनी, रतनपुर की माँ महामाया, डोंगरगढ़ की माँ बम्लेश्वरी और दंतेवाड़ा की माँ दंतेश्वरी शक्तिपीठ के विकास के लिए चार धाम की तर्ज पर योजना बनाई गई है। राज्य सरकार द्वारा तीर्थ दर्शन योजना पुनः प्रारंभ की गई है। इस योजना में 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के साथ-साथ विधवा, परित्यक्ता और दिव्यांगजनों को तीर्थ यात्रा का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पात्र नागरिकों से इस योजना का भरपूर लाभ उठाने की अपील की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि श्री रामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना के तहत 22 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने रामलला के दर्शन किए। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में कुंभ के दौरान छत्तीसगढ़ का मंडप बनाया गया था, जहां छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं को ठहरने और भोजन के निःशुल्क व्यवस्था की गई थी। मुख्यमंत्री साय ने राज्य को नक्सलमुक्त बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास योजनाओं के साथ-साथ समावेशी विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। अंदरूनी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। लोगों को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। बस्तर क्षेत्र में नियद नेल्लानार योजना के तहत नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ ग्रामीणों को केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। यहां बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर कृषि मंत्री रामविचार नेताम, खाद्य मंत्री दयालु दास बघेल, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े और सांसद चिंतामणि महाराज ने भी सभा को संबोधित किया। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश की समृद्धि, शांति और उन्नति की कामना की। साथ ही रोपवे निर्माण के लिए बधाई देते हुए इसे ऐतिहासिक पहल बताया। समापन समारोह में छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक संस्कृति की झलक देखने को मिली। कार्यक्रम के दौरान भक्ति संगीत ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम में माता कुदरगढ़ को समर्पित भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। मुख्यमंत्री साय ने इस अवसर पर विभिन्न विभागों की योजनाओं पर लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन किया और हितग्राहियों को हितग्राहीमूलक सामग्री का वितरण किया।

राज्य में व्यापारिक समूहों को प्रोत्साहन देने और औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ाने छत्तीसगढ़ सरकार ने उठाया महत्वपूर्ण कदम

(पेज 1 से आगे)

व्यय में उल्लेखनीय कमी आएगी

राज्य सरकार ने छत्तीसगढ़ के भीतर माल परिवहन के लिए अनिवार्य ई-वे बिल की सीमा 50,000 से बढ़ाकर 01 लाख कर दी है। यह निर्णय विशेष रूप से छोटे व्यापारियों को राहत देने के उद्देश्य से लिया गया है। इस निर्णय से व्यापारियों को 01 लाख तक के मूल्य के सामानों के परिवहन में अब ई-वे बिल की आवश्यकता नहीं होगी। इस निर्णय से राज्य में ई-वे बिल जनरेट करने वाले लगभग 26% व्यापारियों को ई-वे बिल जनरेट करने से मुक्ति मिलेगी। इस निर्णय से ई-वे बिल जनरेशन में 54 प्रतिशत की कमी आएगी, जिससे अनुपालन व्यय में उल्लेखनीय कमी आएगी।

इन उत्पादों में छूट लागू नहीं होगी

हालांकि, कुछ विशेष वस्तुएं जैसे पान मसाला, तंबाकू उत्पाद, विशिष्ट लकड़ी उत्पाद जैसे-प्लायवुड, लेमिनेटेड शीट, पार्टिकल बोर्ड, फाइबर बोर्ड, आयरन, स्टील एवं उसके सामान, कोयला के लिए यह छूट लागू नहीं होगी. व्यापारियों द्वारा लंबे समय से ई-वे बिल में छूट दिए जाने की मांग पर यह निर्णय लिया गया है, जो व्यापार को सुगम और लागत प्रभावी बनाने की दिशा में एक बड़ी पहल है।

मध्यमवर्गीय परिवारों को सीधी राहत

राज्य सरकार ने 01 अप्रैल 2025 से पेट्रोल पर वैट की राशि में 1 प्रति लीटर की कटौती की है. इस निर्णय से पेट्रोल की कीमतों में सीधे कमी आएगी, जिसका लाभ विशेष रूप से मध्यमवर्गीय और निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों को मिलेगा. छत्तीसगढ़ में दुपहिया वाहनों का उपयोग करने वालों की संख्या अधिक है, जो मुख्यतः पेट्रोल पर निर्भर हैं. वैट में की गई यह कटौती इन परिवारों की रोजमर्रा की लागत को कम करने में सहायक सिद्ध होगी।

एम्स भोपाल में एसोसिएशन ऑफ कोलन एंड रेक्टल सर्जन्स ऑफ इंडिया का 28वां आयोजन

-समता पाठक

जगत प्रवाह. भोपाल। समता पाठक

भोपाल: एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में जनरल सर्जरी विभाग द्वारा एसोसिएशन ऑफ कोलन एंड रेक्टल सर्जन्स ऑफ इंडिया (ACRSI) का 28वां इंस्ट्रक्शनल कोर्स और फेलोशिप परीक्षा 2 अप्रैल 2025 से आयोजित की जा रही है। 4 अप्रैल तक इस कार्यक्रम के तीन दिनों की शैक्षणिक गतिविधियां सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी हैं। पहले दिन सर्जिकल स्टेपलर्स पर, दूसरे दिन स्टोमा एप्लायंसेज पर, और तीसरे दिन प्रोक्टोलॉजी में लेजर के उपयोग पर आधारित कार्यशालाएं आयोजित की गईं। प्रतिभागियों को देश-विदेश के विशेषज्ञ डॉक्टरों के मार्गदर्शन में व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया। यह कार्यक्रम कोलोरेक्टल सर्जरी के क्षेत्र में ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच बन रहा है। इंस्ट्रक्शनल कोर्स के बाद, एसीआरएसआई फैलोशिप प्राप्त करने के इच्छुक उम्मीदवारों को कड़ी परीक्षा प्रक्रिया से गुजरना होगा। पहले दिन, उम्मीदवारों का मूल्यांकन बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs), लघु और विस्तृत उत्तर वाले प्रश्नों के साथ-साथ टेबल वाइवा के माध्यम से किया गया। दूसरे दिन, उनका मूल्यांकन दो लघु केस स्टडी और एक विस्तृत केस स्टडी के माध्यम से किया गया। एम्स भोपाल चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा देने और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रतिबद्ध है। यह कार्यक्रम कोलोरेक्टल सर्जरी के क्षेत्र में ज्ञान और कौशल के आदान-प्रदान के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगा। प्रो. सिंह ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, "इस प्रतिष्ठित कोर्स और परीक्षा की मेजबानी करना चिकित्सा शिक्षा और सर्जिकल विशेषज्ञता को आगे बढ़ाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस तरह के कार्यक्रम न केवल डॉक्टरों को नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हैं, बल्कि समाज के व्यापक हित में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में भी सहायक होते हैं।" उद्घाटन समारोह में डिप्टी डायरेक्टर (प्रशासन) कर्नल (डॉ.) अजीत कुमार, डीन (अकादमिक) प्रोफेसर (डॉ.) रजनीश जोशी तथा कार्यवाहक मेडिकल अधीक्षक प्रोफेसर (डॉ.) शशांक पुरवार की गरिमामय उपस्थिति रही।

गृहमंत्री अमित शाह ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के साथ की दंतेश्वरी की पूजा-अर्चना

-आनंद शर्मा

जगत प्रवाह. रायपुर। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर अपने एक दिवसीय दंतेवाड़ा प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के साथ बस्तर अंचल की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी मंदिर में पूजा-अर्चना कर देश एवं प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री अरुण साव एवं विजय शर्मा, कृषि मंत्री रामविचार नेताम, वन मंत्री केदार कश्यप, विधायक किरण देव सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

सम्पादकीय

डोनाल्ड ट्रंप का ट्रेड वार भारत के लिए अवसर या अभिशाप

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनॉल्ड ट्रंप ने भारत सहित ज्यादातर देशों पर टैरिफ शुल्क बढ़ा ही दिया। न्यूनतम 10 प्रतिशत, अधिकतम 49 फीसदी। इसके साथ ही धमकी भी दे दी। अमेरिका के खिलाफ कोई भी देश प्रतिक्रिया न दें। नहीं तो खैर नहीं। अब इसका असर दुनिया पर कितना और कैसे पड़ेगा। यह आने वाला समय बताएगा। ट्रंप ने तो अपना फैसला सुना दिया। अब बारी बाकी देशों की है। बाकी देशों का अगर पलटवार ज्यादा तीखा हुआ तो टैरिफ वॉर के परिणाम ज्यादा गंभीर होंगे। सच यह है, यह घटना उतनी सीधी नहीं है जितनी अभी दिखाई दे रही है। अगर जल्दी ही कुछ हल नहीं निकला तो अप्रत्याशित परिणाम देखने को मिलेंगे। मंहगाई से लेकर बेरोजगारी और मंदी यहां तक कि महामंदी की भी बात विशेषज्ञ कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि अमेरिका वैश्विक व्यापार नीति तय करे और पूरी दुनिया चुपचाप बैठी रहे। यह संभव नहीं है।

अमेरिका भारत का सबसे बड़ा ट्रेड भागीदार है। अपने कुल निर्यात का छठवां हिस्सा अमेरिका को भेजता है। सन् 2023 में 190 अरब डॉलर का व्यापार दोनों देशों के बीच हुआ। भारत पर ट्रंप ने 26 फीसदी का टैरिफ लगाया है। जो यूरोपीय संघ से ज्यादा लेकिन चीन से कम है। राहत की बात दवा कंपनियों के लिए है। इन्हें फिलहाल टैरिफ से बाहर रखा गया है। अरबिंदो फार्मा जैसी जैनरिक कंपनियों के लिए फायदेमंद है। लेकिन ऑटो टैरिफ से गाड़ियों और पार्ट्स की कीमतें बढ़ जाएंगी। टैरिफ किसी न किसी रूप में हमारे निर्यात के 78.5 बिलियन डॉलर को प्रभावित करेंगे। भारत अमेरिका के साथ व्यापारिक रिश्ते मजबूत करने में लगा हुआ है। भारत ने बोरबॉन व्हिस्की पर शुल्क 150 प्रतिशत से घटाकर 100 फीसदी कर दिया है। बड़ी मोटर साइकिलों पर 50 प्रतिशत से घटाकर 30 फीसदी कर दिया है। बादाम और क्रेनबेरी जैसे कई उत्पादों पर टैरिफ कर करने का प्रस्ताव भारत ने दिया है। ऊर्जा और रक्षा सौदों के लिए भी भारत तैयार है। भारत के लिए यह अवसर भी है। इसकी वजह 140 करोड़ लोगों का उपभोक्ता आधार है। भारत में बना सामान भारत में ही खप जाता है। इसलिए भारत पर इसका सीमित असर पड़ने की संभावना है। भारत के खिलाफ अमेरिका की सबसे बड़ी शिकायत कृषि उत्पादों पर ज्यादा कर है, जो औसतन 113 प्रतिशत है। कई सामान पर 300 फीसद तक है। अमेरिका कृषि उत्पादों पर टैक्स छूट चाहता है पर भारत इसके लिए तैयार नहीं है। अगर अन्य देशों ने अपनी तीखी प्रतिक्रिया दी तब ट्रेडवॉर छिड़ना तय है। सबसे बड़ी समस्या आपूर्ति श्रंखला के लिए खड़ी होगी। ऐसे में अराजकता फैलने का डर है। ग्लोबल दुनिया की जगह द्विपक्षीय व्यापार समझौते होंगे। नतीजा, जीडीपी में सिकुड़न दिखाई देगी। जिसका नतीजे बढ़ती बेरोजगारी के रूप में सामने आएगा। अंत में मंदी का खतरा बढ़ सकता है।

सियासी गहमागहमी

नेता अफसरों के गले की हड्डी बन गया नर्सिंग घोटाला

व्यापमं के बाद मप्र का बहुचर्चित नर्सिंग कॉलेज मान्यता फर्जीवाड़े मामले में जबलपुर हाइकोर्ट में सुनवाई हुई। इंडियन नर्सिंग काउंसिल के जांच में अपात्र कॉलेजों को पात्र बताते हुए मान्यता देने पर हाईकोर्ट ने सख्ती दिखाई है। हाइकोर्ट ने आईएनसी को सत्र 2018 से 2022 तक की मान्यता की फाइलें अगली सुनवाई में पेश करने का आदेश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 08 अप्रैल को होगी. नर्सिंग फर्जीवाड़ा मामले में लॉ स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विशाल बघेल की जनहित याचिका में हाईकोर्ट की स्पेशल बेंच के जस्टिस संजय द्विवेदी और जस्टिस अचल कुमार पालीवाल ने सुनवाई की। याचिकाकर्ता की ओर से सुनवाई के दौरान बताया गया कि मध्य प्रदेश नर्सिंग काउंसिल और मेडिकल यूनिवर्सिटी के साथ-साथ इंडियन नर्सिंग काउंसिल के द्वारा भी निरीक्षण कर अपात्र कॉलेजों को पात्र बताते हुए सुटेबालिटी दी गई थी। इसलिए आईएनसी के अधिकारियों द्वारा झूठी निरीक्षण रिपोर्ट देकर अपात्र कॉलेजों को मान्यता देने में सहयोग किया गया है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि घोटाले में शामिल नेता और अफसरों पर नकेल कसने की हाईकोर्ट ने पूरी तैयारी कर ली है।

आखिर अध्यक्ष पद से बाहर क्यों हुए शिवराज?

भारतीय जनता पार्टी में राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के चुनाव की प्रक्रिया पूरी हो गई है। लाभग यह आशंका है कि अगले एक दो दिन में नये अध्यक्ष का नाम भी सार्वजनिक कर दिया जायेगा। ऐसे में चर्चा इस बात को लेकर है कि शुरुआती समय से राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए तीन नेताओं का नाम चल रहा था तो फिर शिवराज सिंह चौहान का नाम अचानक कैसे बाहर हो गया। बल्कि देखा जाये तो शिवराज सिंह चौहान ने अपने राजनैतिक जीवन में पार्टी और सरकार के लिए काफी कार्य किया। सूत्रों के अनुसार शिवराज सिंह चौहान का नाम पीछे खींचने की पहल संघ के पदाधिकारियों ने की। क्योंकि वे बिल्कुल भी नहीं चाहते कि अब शिवराज को केन्द्र में इससे बड़ी कोई जिम्मेदारी मिले। जबकि देखा जाये तो एक समय ऐसा था जब शिवराज को सबसे ज्यादा पसंद संघ के लोग किया करते थे, लेकिन समय के फेर ने सबकुछ बदल दिया है।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

आखिरकार मोदी जी ने दिया "tariffs" का करारा जवाब!

पेट्रोल-डीजल पर tax और गैस सिलेंडर का दाम और बढ़ा दिया।

महंगाई से त्रस्त जनता को सरकारी लूट का एक और तोहफा पकड़ा दिया!

-राहुल गांधी
कांग्रेस नेता @RahulGandhi

घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में 50 रुपया की वृद्धि कर केंद्र सरकार ने आम आदमी पर महँगाई का चाबुक चलाया है। भोपाल में अब सिलेंडर की कीमत 858.50 रुपये हो जाएगी।

-कमलनाथ
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

भारत के प्रतिष्ठित और चुनिंदा वित्तमंत्रियों की श्रेणी में उच्च कोटि के अर्थशास्त्री रहे हैं चिदंबरम

समता पाठक/जगत प्रवाह

दुनिया में कुछ शख्सियतें ऐसी भी होती हैं, जिन्हें पैसे को चलाने का हुनर बखूबी आता है. भारत में पी. चिदंबरम की गिनती ऐसी ही शख्सियतों में होती है। पी. चिदंबरम देश के ऐसे वित्त मंत्री रहे हैं। एक तबके का ऐसा भी मानना है कि पी. चिदंबरम आगामी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री पद के दावेदार हो सकते हैं। वैसे इस बारे में कांग्रेस पार्टी ने किसी तरह की घोषणा नहीं की है। पूर्व वित्तमंत्री प्रणब मुखर्जी के राष्ट्रपति बनने के बाद पी. चिदंबरम को वित्तमंत्री के पद पर बिठाया गया। इससे ठीक पहले वे केंद्रीय गृहमंत्री थे। चिदंबरम का जन्म 16 सितंबर, 1945 को तमिलनाडु के गांव कनाडुकथन में हुआ था। उनका पूरा नाम पलानीअप्पन चिदंबरम है। चिदंबरम ने आरंभिक शिक्षा मद्रास क्रिश्चियन सेकेंडरी स्कूल, चेन्नई से पूरी की। उन्होंने चेन्नई के प्रेसिडेंसी कॉलेज से विज्ञान में सांख्यिकी विषय के साथ स्नातक की डिग्री हासिल की। उन्होंने बोस्टन के हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से बिजनेस मैनेजमेंट में मास्टर डिग्री हासिल की। पी. चिदंबरम शुरुआती दौर में चेन्नई हाईकोर्ट में वकालत करते थे। साल 1984 में वे वरिष्ठ वकील के तौर पर नामित हुए। चिदंबरम कई राज्यों के हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में बतौर वकील काम कर चुके हैं। पी. चिदंबरम एक मंजे हुए अनुभवी राजनेता हैं। यह अलग बात है कि कई अवसर पर चिदंबरम के निर्णय की काफी आलोचना हुई। जनलोकपाल आंदोलन जब चरम पर था, तो चिदंबरम देश के गृहमंत्री थे। जब दिल्ली पुलिस ने कानून व्यवस्था बिगड़ने का हवाला देकर अन्ना हजारे को गिरफ्तार करके उन्हें तिहाड़ भेजा, तो पी. चिदंबरम पर उंगली उठी। तब ऐसा कहा गया कि इस अप्रिय स्थिति के लिए देश के गृहमंत्री होने के नाते चिदंबरम ही जिम्मेदार हैं। अन्ना हजारे की गिरफ्तारी के मामले में चिदंबरम की खूब किरकिरी हुई. रामलीला मैदान में योगगुरु रामदेव के समर्थकों पर हुए लाठीचार्ज के मामले में भी पी. चिदंबरम पर सवाल उठाए गए।

पी. चिदंबरम ने वर्ष 1972 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्यता ग्रहण की। चिदंबरम 1973 में तमिलनाडु में युवा कांग्रेस अध्यक्ष और तमिलनाडु कांग्रेस प्रदेश समिति के महासचिव भी रह चुके हैं। वर्ष 1984 में तमिलनाडु के शिवगंगा निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव जीतने के साथ पी. चिदंबरम सक्रिय राजनीति में आए। इस सीट से उन्होंने लगातार 06 बार तक जीत दर्ज की। राजीव गांधी सरकार के अंतर्गत पी. चिदंबरम कार्मिक मंत्रालय और वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री के तौर पर कार्य कर चुके हैं। साल 1986 में पी. चिदंबरम को लोक-शिकायत व पेंशन मंत्रालय के साथ कार्मिक मंत्रालय में भी मंत्री पद मिला. साल 1986 के अक्टूबर में पी. चिदंबरम को केन्द्रीय गृह मंत्रालय में, आंतरिक सुरक्षा मंत्री का पदभार दिया गया। साल 1991 में पी. चिदंबरम को राज्यमंत्री के पद पर वाणिज्य

श्रीराम नवमी विशेषः श्रीराम का जीवन अपने आप में मर्यादा और आदर्शों की

▪ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के 9 आदर्श और उनका अनुपम जीवन दर्शन

आज की बात

प्रवीण कक्कड़

स्वतंत्र लेखक

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।"

मैथलीशरण गुप्त जी की यह पंक्तियां... श्रीराम के जीवन को परिभाषित करती हैं। हम जब भी श्रीराम का नाम लेते हैं। मन हर्ष से भर जाता है। एक पवित्रता का अनुभव होने लगता है। श्रीराम का जीवन अपने आप में मर्यादा और आदर्शों की व्याख्या है। वे वन जाकर जहां पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, वहीं भाईयों से स्नेह दिखाकर परिवार में गठजोड़ को परिभाषित करते हैं। वन में केवट और शबरी से संवाद कर समाजवाद सिखाते हैं, वहीं निशादराज, सुग्रीव और विभीषण के संबंधों से मित्रता की सीख देते हैं। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाने वाली श्री राम नवमी भगवान श्रीराम के आदर्श जीवन और उनकी दिव्य लीला का स्मरण कराती है। श्रीराम न केवल भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं, बल्कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष में धर्म, न्याय और कर्तव्य का पालन कर मानवता को एक उच्च आदर्श दिया।

श्रीराम का जन्म और उनका अद्भुत चरित्र

श्रीराम का जन्म अयोध्या के सूर्यवंशी राजा दशरथ और रानी कौशल्या के यहाँ हुआ। उनके जन्म का उद्देश्य धरती से अधर्म का नाश करना और मर्यादित जीवन का आदर्श प्रस्तुत करना था। बाल्यकाल से ही वे गुणवान, विनम्र और सर्वप्रिय थे। गुरु विश्वामित्र के साथ राक्षसों का वध करते हुए उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया और माता सीता के स्वयंवर में शिव धनुष तोड़कर उन्हें पत्नी रूप में प्राप्त किया। किंतु, श्रीराम का वास्तविक चरित्र तब उजागर हुआ जब उन्हें 14 वर्ष का वनवास मिला। उन्होंने बिना किसी प्रतिरोध के पिता की आज्ञा मानी और सीता तथा लक्ष्मण के साथ वन चले गए। वनवास के दौरान उन्होंने ऋषियों की रक्षा की, राक्षसों का संहार किया और अंततः लंकापति रावण का वध कर धर्म की स्थापना की।

श्रीराम के 9 आदर्शः जीवन में उतारने योग्य प्रेरणादायक सूत्र

1 कर्तव्यपरायणता – "धर्म सर्वोपरि है"
श्रीराम ने सिद्ध किया कि व्यक्ति को हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, चाहे उसके लिए कितनी भी बड़ी कुर्बानी देनी पड़े।

2. आज्ञाकारिता – "गुरु और माता-पिता की आज्ञा शिरोधार्य"
उन्होंने माता-पिता और गुरु की आज्ञा को कभी नहीं तोड़ा, यहाँ तक कि सिंहासन का मोह भी उन्हें विचलित नहीं कर पाया।

3 धैर्य – "हर संकट में संयम बनाए रखो"
सीता के वियोग में भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया, बल्कि योजना बनाकर रावण को पराजित किया।

4. न्याय – "अन्याय के सामने कभी न झुकें"
उन्होंने रावण जैसे बलशाली अत्याचारी का वध कर दिखाया कि अन्याय का अंत अवश्य होता है।

5. विनम्रता – "गुणवान होकर भी अहंकाररहित"
वे अयोध्या के राजा थे, किंतु निषादराज गुह, केवट और वानरों से भी मित्रता की।

6. प्रेम और समर्पण – "स्नेह ही सच्चा बल है"
लक्ष्मण, भरत और हनुमान जैसे भक्तों के प्रति उनका प्रेम अद्वितीय था।

7. सत्यनिष्ठा – "सत्य ही परम धर्म है"
उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला, यहाँ तक कि रावण को भी युद्ध से पहले सचेत किया।

8. त्याग – "सुखों से ऊपर है धर्म"
उन्होंने राजसी वैभव छोड़कर वनवास स्वीकार किया, क्योंकि धर्म सुख से बढ़कर था।

9. आदर्श शासन – "प्रजा ही ईश्वर है"
रामराज्य का आदर्श आज भी शासन व्यवस्था के लिए प्रेरणादायी है, जहाँ प्रजा सुखी और सुरक्षित थी। श्रीराम केवल एक देवता नहीं, बल्कि एक आदर्श जीवनशैली के प्रतीक हैं। यदि हम उनके इन 9 सूत्रों को अपने जीवन में उतार लें, तो निश्चित ही हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। इस राम नवमी पर प्रण लें कि हम धर्म, कर्तव्य और मर्यादा के मार्ग पर चलें, क्योंकि यही श्रीराम को सच्ची भेंट होगी।

अमेरिका चाहता है भारतीय कृषि बाजार में दखल

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 27 प्रतिशत जवाबी शुल्क बढ़ाकर भारत के प्रधानमंत्री मित्र नरेंद्र मोदी को बड़ा झटका दिया है। ट्रंप ने दूसरे कार्यकाल में मोदी ही नहीं दुनिया को जता दिया है कि उनके लिए 'अमेरिका प्रथम' अर्थात देशहित से अहम् और कुछ नहीं है। अब यदि कोई रियायत मिलती भी है तो ट्रंप कृषि उत्पाद का बाजार खोलने के बाद ही कुछ छूट दे सकते हैं। ट्रंप भारत के कृषि क्षेत्र में टैरिफ कम कराना चाहते हैं। ताकि अमेरिका के लिए खेती, डेयरी और पोल्ट्री उत्पादों के लिए भारतीय बाजार खुल जाए। वर्तमान में भारत अमेरिका पर 52 प्रतिशत टैरिफ लगाता है। दरअसल भारत की 70 करोड़ से भी अधिक आबादी कृषि, दुध और मछली एवं चिकन व अन्य समुद्री उत्पादन पर आश्रित है। इन उत्पादों से जुड़े लोग आत्मनिर्भर रहते हुए अपनी आजीविका चलाते हैं। भारत सरकार इनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाए रखने की दृष्टि से मुफ्त अनाज, खाद्य सब्सिडी एवं किसानों को छह हजार रुपए प्रतिवर्ष अनुदान के रूप में देती है, जबकि अमेरिका अपने किसान को 26 लाख रुपए की छूट देता है। भारत अपने कृषि बाजार में किसी का दखल नहीं चाहता, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है।

भारत की 70 प्रतिशत अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि और उससे जुड़े उत्पाद हैं। अब अमेरिका इस परिप्रेक्ष्य में भारत पर व्यापक दबाव बनाकर द्विपक्षीय बातचीत करने का दबाव बना रहा है। अमेरिका चाहता है कृषि उत्पादों के लिए भारतीय बाजार तो खुले ही उत्पादों पर शुल्क भी कम करे। यदि भारत कोई समझौता करता है तो ब्रिटेन और यूरोपीय संघ भी मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के लिए दबाव बनाएंगे। यूरोपीय संघ चीज व अन्य दुग्ध उत्पादों पर शुल्क कटौती की इच्छा जता चुका है। अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक और अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जेमीसन ग्रीर ने भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल से बातचीत में इन मुद्दों को द्विपक्षीय वार्ता में शामिल करने की बात कही है। किंतु भारत के लिए कृषि में बाहरी दखल एक संवेदनशील मसला है, क्योंकि हमारे किसान विदेशी पूंजीपतियों से प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में नहीं हैं।

भारत में कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक सांस्कृतिक तरीका भी है। इसीलिए भारत के जितने भी पर्व हैं, उनका पंचांग कृषि पद्धति पर ही आधारित है। जबकि अमेरिका व यूरोपीय देश कृषि को मुनाफे का उद्योग मानते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2024 में अमेरिका का कृषि निर्यात 176 अरब डॉलर था, जो उसके कुल व्यापारिक निर्यात का लगभग 10 प्रतिशत है। बड़े पैमाने पर मशीनीकृत खेती और भारी सरकारी सब्सिडी के साथ अमेरिका और अन्य विकसित देश भारत को अपने निर्यात का विस्तार करने के लिए आकर्षक बाजार के रूप में देखते हैं। जबकि भारत अपने कृषि क्षेत्र को मध्यम से उच्च शुल्क की कल्याणकारी योजनाओं के द्वारा संरक्षित किए हुए है ताकि अपने किसानों को अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाया जा सके। कृषि क्षेत्र को मुक्त बाजार बनाने का मतलब है कि आयात प्रतिबंधों और शुल्कों को कम करना। कृषि को बाहरी सब्सिडी वाले विदेशी आयातों के लिए खोलने का अर्थ होगा, सस्ते खाद्य उत्पादों का भारत में आना, यह खुलापन भारतीय किसानों की आय और आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित करेगी।

ऐसा ही दबाव भारत पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने जेनेवा में 2022 में हुई बैठक में बनाया था। यहां तक कि अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों ने भारतीय किसानों को दी जाने वाली कृषि अनुवृत्ति (सब्सिडी) का जबरदस्त विरोध किया था। ये देश चाहते हैं कि किसानों को जो सालाना छह हजार रुपए की आर्थिक मदद और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अनाज खरीदने की सुविधा दी जा रही है, भारत उसे तत्काल बंद करे। यही नहीं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत देश भर के 81 करोड़ लोगों को जो मुफ्त अनाज दिया जा रहा है उस पर भी आपत्ति जताई थी। देश की करीब 67 फीसदी आबादी को मुफ्त अनाज मिलता है। इस कल्याणकारी योजना पर 1 लाख 40 हजार करोड़ रुपए का खर्च सब्सिडी के रूप में प्रति वर्ष होता है। परंतु भारत ने अपने किसान और गरीब आबादी के हितों से समझौता करने से साफ इंकार कर दिया था। इसे डब्ल्यूटीओ के तय नियमों का खुला उल्लंघन करार दिया गया था। क्योंकि नियमानुसार अनाजों के उत्पादन मूल्य पर 10 प्रतिशत से ज्यादा सब्सिडी नहीं दी जा सकती है। जबकि भारत इससे कई गुना ज्यादा सब्सिडी देता है। दरअसल इन देशों का मानना है कि सब्सिडी की वजह से ही भारतीय किसान चावल, गन्ना, कपास और गेहूं का भरपूर उत्पादन करने में सक्षम हुए हैं। इसी का परिणाम है कि भारत गेहूं व चावल के निर्यात में अग्रणी देश बन गया है। बांग्लादेश, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात, इंडोनेशिया, फिलीपींस और नेपाल के अलावा 68 देश भारत से गेहूं आयात करते हैं। भारत दुनिया के कुल 150 देशों को चावल का निर्यात करता है। अमेरिका को भारत की यह समृद्धि फूटी आंख नहीं सुहा रही है।

किसी भी देश की प्रतिबद्धता विदेशी हितों से कहीं ज्यादा देश के किसान, गरीब व वंचित तबकों की खाद्य उत्पादन और सुरक्षा के प्रति ही होनी चाहिए। लिहाजा नरेंद्र मोदी 2014 में प्रधानमंत्री बनने के समय से ही किसानों के हित में खड़े दिखाई दिए हैं। अतएव 2014 में इसी जेनेवा में डब्ल्यूटीओ के हुए सम्मेलन में नरेंद्र मोदी ने भागीदारी करते हुए 'समुचित व्यापार अनुबंध' ट्रेड फैसिलिटेशन एग्रीमेंट्स पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। इस करार की सबसे महत्वपूर्ण शर्त थी कि संगठन का कोई भी सदस्य देश अपने देश में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों के मूल्य का 10 फीसदी से ज्यादा अनुदान खाद्य सुरक्षा पर नहीं दे सकता है। जबकि भारत में खाद्य सुरक्षा कानून के तहत देश की 67 फीसदी आबादी खाद्य सुरक्षा के दायरे में है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की मन की बात में छिंदवाड़ा मॉडल की तारीफ

(पेज 1 से जारी)

छिंदवाड़ा में प्रशिक्षण और गांव से शुरूआत

राजाखोह गांव की देवकी चौरे, लता मस्कोले, नीतू अहिरवार और मंजू चौरे सहित कुछ महिलाओं ने महुआ उत्पादक समूह का गठन किया और आदिवासी जीवन शैली से जुड़े व्यंजनों के व्यापार के लिए 5-5 हजार एकत्रित किए। इसी के तहत उन्होंने महुआ के फूल से कुकीज बनाने का फैसला लिया और इस आइडिया से उनका जीवन बदल गया। महिलाओं ने बताया कि इसकी शुरुआत 2023 में हुई। गांव के पटवारी मनोज सिंह ने उन्हें महुआ के फूल से कुकीज बनाने का सुझाव दिया। इसके बाद बताए गए तरीके से काम करने के लिए सभी ने सीटीसी तामिया में जाकर इसका प्रशिक्षण प्राप्त किया। गायत्री सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर इन महिलाओं ने नया बिजनेस शुरू किया। इन महिलाओं ने देश में पहली बार महुआ के फूल से कुकीज बनाना शुरू किया। ऑनलाइन मार्केटिंग की, दूरदराज के छिंदलाड़ा से महुआ की कुकीज का जायका दिल्ली तक पहुंच गया और मन की बात में महुआ की कुकीज की चर्चा आ गई। गायत्री समूह से जुड़ी देवकी चौरे ने बताया कि पहले ट्रेनिंग ली। इसमें महुआ के ड्रायफ्रूट लड्डू और नान खटाई बनती है। पूरे भारत में ऑनलाइन बेचा जाता है। आदिवासी इलाकों में महुआ अब तक देसी शराब बनाने के लिए इस्तेमाल होता रहा है। ऐसा पहली बार है कि महुआ के फूलों से कुकीज बनाई जा रही है। महिलाओं ने महुआ के बिजनेस की परिभाषा बदल दी। जिला प्रशासन एनआईसी के जरिए सोशल मीडिया के माध्यम से इनके उत्पादों को प्लेटफॉर्म दिया है। ये महिलाएं प्रदेश की अन्य महिलाओं के लिए मोटिवेशन बन रही है। पीएम मोदी ने महिलाओं की पहल को महिला सशक्तिकरण का बेहतरीन उदाहरण बताया।

सीएसआर मद से मिली मदद, फिर काम किया शुरू

समूह की सदस्य देवकी चौरे ने बताया किसी कार्य को अंजाम देने के लिए सबसे आवश्यक होती है पूंजी। लेकिन, महिलाएं घरेलू तौर पर आर्थिक रूप से मजबूत नहीं थीं। परंतु एक कंपनी ने सीएसआर के माध्यम से सब पर विश्वास जताते हुए समूह के आधार पर मशीन उपलब्ध कराई। इसके बाद हमारी कार्य करने की दक्षता देखते हुए आसपास के गांव की महिलाएं भी इस मुहीम से जुड़ी, जिन्हें इससे रोजगार मिला। इसकी शुरुआत में जब महुआ की आवश्यकता हुई तो आसपास के गांव से महुआ को एकत्रित किया गया। महिलाओं की लगन और उत्पादन को देखते हुए स्थानीय स्तर से जिला स्तर पर बहुत जल्द ही कुकीज की मांग बढ़ गई। सीएसआर से छिंदवाड़ा में कई सेंटर्स चल रहे हैं और युवा, महिलाएं प्रशिक्षित होकर रोजगार से जुड़ रही हैं। कमलनाथ के कारण ही छिंदवाड़ा को सीएसआर का सबसे ज्यादा लाभ मिल रहा है।

कमलनाथ जैसी सोच हो तो हर एक जिले का जिक्र होगा मन की बात में

1980 के दशक में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने छिंदवाड़ा की राजनीति में प्रवेश किया और एक ऐसा सपना देखा, जो आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने आदिवासियों और आमजन के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए इस गरीब क्षेत्र को महानगरों की तर्ज पर विकसित करने का संकल्प लिया। आज छिंदवाड़ा में ट्रेनिंग सेंटर, इंडस्ट्रियल स्कूल और युवाओं को प्रेरित करने वाले संस्थान मौजूद हैं, जो क्षेत्र के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का काम कर रहे हैं। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के बावजूद भी छिन्दवाड़ा मध्यप्रदेश के 52 जिलों में समृद्धि और विकास में 5वें नंबर पर आता है। जिले की अनुमानित जीडीपी विगत वर्षों में 22,532 करोड़ रुपये रही है। यहीं नहीं साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में भी जिले का प्रदेश में 19वां स्थान है। इन दो बातों ने इस बात पर ध्यान खींचा कि शिक्षा और संपन्नता में अग्रणी इस जिले ने ऐसा क्या कमाल किया है, जो आज हम इसके बारे में चर्चा कर रहे हैं। अगर हम छिंदवाड़ा को स्किल कैपिटल ऑफ मध्यप्रदेश कहे तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस कमजोर नब्ज को अभी तक हम टटोल रहे थे छिन्दवाड़ा में वो नब्ज ना केवल पकड़ी गई बल्कि बीमारी का इलाज भी शुरू कर दिया गया। वो बीमारी थी युवाओं में बेरोजगारी, जिसे तुरंत, स्थिर और मजबूत इलाज की जरूरत थी और वो मिला कौशल उन्नयन के माध्यम से। छिन्दवाड़ा में उन्नत किस्म के स्किल सेंटर्स ने आसपास के आदिवासी अंचल के युवाओं के हुनर को समझा और उसे संवारा और उन्हें रोजगारमूलक प्रशिक्षण देकर उनके जीवन को एक बेहतर दिशा दी। अब हमारे प्रदेश में जिस शिक्षा की जरूरत है वह पारंपरिक शिक्षा नहीं है। स्किल डेवलपमेंट युवाओं का होना चाहिए। मध्यप्रदेश में छिंदवाड़ा के स्किल डेवलपमेंट स्टेचिनिंग मॉडल को अपनाने की जरूरत है। जब आप अपने शहर में उन युवाओं को मौका देंगे जिनका एक्सपोजर उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय लोगों से कम होता है तो वह युवा भटकाव की तरफ कम जायेंगे। इन युवाओं को कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) से जोड़कर हुनरमंद करके अपने ही माहौल में बसने की जरुरत है। प्रदेश में मशरूम जैसे कॉलेज एवं विश्वविद्यालय खोल दिए गये हैं, जिनकी शिक्षा युवाओं में रोजगार देने के लायक नहीं है, उस शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करने की जरूरत है। जब युवकों को शिक्षा और रोजगार अपने ही शहर में प्रदान की जाएगी, तब ही युवाओं का पलायन एवं भटकाव रुकेगा। उनकी जीवन शैली में परिवर्तन आयेगा। छिन्दवाड़ा का कौशल विकास उन्नयन मॉडल हमारे देश के युवाओं में बढ़ते हुए मानसिक अवसाद और आत्महत्या जैसे मामले को रोकने में भी कारगर हो रहा है। छिन्दवाड़ा को रोल मॉडल बनाने के पीछे एक व्यक्ति की सोच ने काम किया है। वह सोच राजनीति और दलगत पार्टियों से उपर है। और वह नाम है कमलनाथ। छिन्दवाड़ा में कौशल विकास उन्नयन के रोजगारमूलक सेन्टर्स इस बात की गवाही दे रहे हैं। उन्होंने छिन्दवाड़ा के आसपास में 100 किलोमीटर जिसमें आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भी आता है, वहां युवाओं को रोजगार के मामलों में अपने व्यक्तिगत प्रयास एवं पहचान और मित्रता से छिन्दवाड़ा शहर में युवाओं के लिये रोजगार की अलख जगा दी है। अगर मन में लक्ष्य की चाह हो तो तस्वीर बदली जा सकती है। एक तरफ भारत में स्वच्छता के क्षेत्र में इन्दौर नम्बर 1 है वहीं छिन्दवाड़ा स्किल डवलपमेंट के मामले में नम्बर 1 है। जहां से स्किल पाकर युवा देश भर की नामी कंपनियों में जॉब कर रहे हैं। निश्चित रूप से इस तरह के स्किल सेंटर्स देश के अन्य शहरों में भी स्थापित किये जाने चाहिए। ताकि अधिक से अधिक युवा प्रशिक्षित होकर आत्मनिर्भर बन सकें।

आज के नेताओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं कमलनाथ

कमलनाथ की दूरदर्शिता आज के युवा नेताओं के लिए एक मिसाल है। हमें 2040 के भारत को एक संपन्न और वैश्विक शक्ति के रूप में देखना चाहिए। मध्यप्रदेश में विकास की अपार संभावनाएं हैं। यहां संसाधन हैं, युवाशक्ति है, और कृषि व उद्योग का विशाल आधार है। हमें एक ऐसी योजना बनानी होगी, जिसमें युवाओं को बेहतर रोजगार मिले, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए संसाधन उपलब्ध हों, बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, किसानों को आधुनिक खेती की तकनीक सीखने का अवसर मिले। छिंदवाड़ा का विकास इस बात का प्रमाण है कि सही दिशा में सोच और मेहनत से किसी भी क्षेत्र को बदला जा सकता है। अब हमें स्वर्णिम भारत के साथ-साथ स्वर्णिम मध्यप्रदेश की ओर बढ़ना है। यही सच्ची प्रगति और विकास का मार्ग है। आदिवासी समुदाय के लोग इसके महत्व को अच्छे से जानते हैं। देश के कई हिस्सों में महुआ के फूलों की यात्रा अब एक नये रास्ते पर निकल पड़ी है। कमलनाथ ने अपने राजनीतिक जीवन में अपने कार्यों से ऐसी छाप छोड़ी है कि अन्य नेता कमलनाथ के सामने बौने साबित हो रहे हैं। वैसे तो देश के विकास में अनेक कार्यों की प्रशंसा होती है लेकिन वाकई में उनकी सोच और लक्ष्यों को देखना है तो संसदीय क्षेत्र छिंदवाड़ा में देखा जा सकता है। छिंदवाड़ा मॉडल पूरे विश्व में चर्चित है। उन्होंने विकास के साथ-साथ समाजसेवा के भी अनुकरणीय कार्य किये हैं।

अबकी बार पचास के पार

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशात सिन्हा
पर्यावरणविद्

अप्रैल के आते ही गर्मी की भी शुरुआत हो गई है। आईएमडी ने चेतावनी दी है कि अप्रैल से जून तक सामान्य से अधिक तापमान रहने की संभावना है जबकि मध्य और पूर्वी भारत तथा उत्तर पश्चिमी मैदानी इलाकों में अधिक गर्मी पड़ने की संभावना है। आईएमडी (मौसम विभाग) ने यह भी कहा है कि इस बार लू भी चल सकती है जहां सामान्यतः लू नहीं चला करती थी। यह भी कहा गया कि उत्तर पश्चिम भारत में गर्मी के दिनों की संख्या दोगुनी हो सकती है। जिन राज्यों में सामान्य से अधिक गर्मी पड़ेगी इनमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के उत्तरी हिस्से शामिल हैं। वैसे पिछले साल 2024 में भारत में कई जगहों पर भी तापमान 50 डिग्री सेल्सियस से उपर पहुंच गया था जो कि अब तक का सबसे अधिक तापमान था लेकिन इस वर्ष देश के ज्यादा शहरों में तापमान 50 डिग्री के पार होने की संभावना है। 29 मई 2024 को दिल्ली के मंगेशपुर में 52.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया था। 1971 में सबसे ज्यादा 44.9 डिग्री सेल्सियस का तापमान दर्ज किया गया था जबकि 2024 में 50 डिग्री सेल्सियस का अधिकतम तापमान दर्ज किया गया था। ये बताता है कि भारत तेजी से गर्म हो रहा है। 2024 की फरवरी 1901 के बाद सबसे गर्म फरवरी रही। देखा जाए तो इस बार फरवरी महीने से ही गोवा और महाराष्ट्र में पहली हिट वेव दर्ज की गई। उड़ीसा, गुजरात, झारखंड, महाराष्ट्र व तेलंगाना में तो मार्च के महीने में ही हिट वेव देखी गई। अगर उत्तराखंड की बात की जाए तो वहां के हिल स्टेशनों पर तो मार्च के महीने के मध्य में ही गर्मी का एहसास होने लगा। इस दौरान दिन का तापमान 24 से 28 डिग्री सेल्सियस रहा जबकि इससे पहले हिल स्टेशनों पर इतना तापमान अप्रैल के पहले हफ्ते के बाद रहता रहा है। कुमाऊं के हिल स्टेशनों पर इन दिनों रात में भले ठंड हो रही है, लेकिन दिन में चमचमाती धूप से तपिश होने लगी है। यह इस बात का सबूत है कि इस साल पश्चिमी और मध्य भारत में सामान्य से अधिक हिट वेव के दिन हो सकते हैं। आने वाले दिनों में यदि यही रुझान रहा तो यह साल पिछले साल से भी ज्यादा गर्म होगा।

गर्म होता मौसम देखते हुए ब्रिटिश वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग की चेतावनी याद आता है। हॉकिंग ने कहा था कि इंसानों की बढ़ती आबादी और बड़े पैमाने पर ऊर्जा की खपत से पृथ्वी 600 सालों से भी कम समय में आग के गोले में तब्दील हो जाएगी। हमारी धरती धीरे धीरे गर्म हो रही है, जिसके कारण मौसम का मिजाज बिगड़ने लगा है। हम प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। जंगल मैदान हो गए हैं। नदी, तालाबों, नहरों पर घर बन गए। हवा जहर बना दिया गया।

विगत कुछ वर्षों से, दुनिया के तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जलवायु परिवर्तन के इस युग में, 'गर्मी का प्रचंड बढ़ना' केवल एक वाक्यांश नहीं, बल्कि एक चिंताजनक वास्तविकता बन गया है। वैज्ञानिकों ने कई बार चेतावनी दे चुके हैं कि धरती का पारा बढ़ रहा है और इसमें हर साल इजाफा हो रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह परिवर्तन मुख्य रूप से मानवजनित कारणों के कारण हो रहा है, जिसमें औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई, और जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग प्रमुख हैं। जलवायु परिवर्तन के अध्ययन में, वैज्ञानिकों ने पाया है कि पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पिछली सदी के दौरान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। इस तापमान वृद्धि का सबसे बड़ा कारण ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन है, जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड, मिथेन, और नाइट्रस ऑक्साइड शामिल हैं। ये गैसें वायुमंडल में सूर्य की ऊर्जा को फंसाकर पृथ्वी को गर्म करती हैं, जिसे 'ग्रीनहाउस प्रभाव' कहा जाता है। विशेषज्ञ बताते हैं कि अगर इसी तरह ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन जारी रहा, तो भविष्य में गर्मी और भी अधिक प्रचंड हो सकती है। इस संकट से निपटने के लिए, वैश्विक समुदाय को संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। पेरिस समझौते जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौते एक सकारात्मक कदम हैं, लेकिन इन प्रयासों को और भी व्यापक और तेजी से लागू करने की आवश्यकता है। सतत विकास और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ना, वनों की कटाई को रोकना, और जीवाश्म ईंधनों के विकल्पों को अपनाना इस संकट से निपटने के कुछ उपाय हैं।

बालिग से दुष्कर्म के आरोपी को 36 घंटे में किया गिरफ्तार

-कैलाशचंद्र जैन

जगत प्रवाह. विदिशा। थाना कुरवाई पुलिस द्वारा गंभीर अपराधों के त्वरित निराकरण एवं अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के अंतर्गत नाबालिग से दुष्कर्म के एक मामले में मात्र 36 घंटे में आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। दिनांक 01.04.2025 को फरियादी द्वारा थाना कुरवाई में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि कृष्णगोपाल राजपूत ने पीड़िता के घर में जबरन घुसकर दुष्कर्म किया तथा जान से मारने की धमकी दी। मामले में थाना कुरवाई द्वारा अपराध क्रमांक 122/25 अंतर्गत धारा 65(1), 332(b), 351(3), 3(5) BNS एवं 3/4 POCSO Act के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना प्रारंभ की गई। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए विभिन्न संभावित स्थानों पर सर्च ऑपरेशन चलाया और आरोपी कृष्णगोपाल राजपूत पिता ओंकार राजपूत, उम्र 19 वर्ष, निवासी झागर को मात्र 36 घंटे में गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशांत चौबे एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस कुरवाई के मार्गदर्शन में तथा थाना प्रभारी निरीक्षक आर.के. मिश्रा के नेतृत्व में की गई।

सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर नदारद, निजी प्रैक्टिस में व्यस्त, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. गाडरवाड़ा। तहसील क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की गैर-मौजूदगी के कारण मरीजों को सही इलाज नहीं मिल पा रहा है। जानकारी के मुताबिक कई चिकित्सा अधिकारी अपने सरकारी कर्तव्यों से मुंह मोड़कर घर पर ही निजी प्रैक्टिस कर रहे हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति बदहाल हो गई है। डॉक्टरों के अभाव में अस्पतालों में कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर्स (CHO) और मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर्स (MPW) की ड्यूटी लगाई जा रही है। हालांकि, ये कर्मचारी पूरी तरह प्रशिक्षित डॉक्टरों की जगह लेने में सक्षम नहीं हैं, जिससे मरीजों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं नहीं मिल पा रही हैं। ग्रामीणों की मांग है कि सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित की जाए और जो डॉक्टर अपनी ड्यूटी छोड़कर निजी प्रैक्टिस में लिप्त हैं, उन पर सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही एमपीडब्ल्यू और सीएचओ को ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी मूल ड्यूटी पर वापस भेजा जाए, ताकि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सेवाएं बहाल हो सकें। स्थानीय नागरिकों ने जिला प्रशासन से जल्द से जल्द इस समस्या के समाधान की अपील की है, ताकि ग्रामीणों को उचित स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें और उन्हें इलाज के लिए भटकना न पड़े।

काशी विश्वनाथ धाम में एटीवी से बुझेगी आग, रेत, दलदल और पानी में आसानी से चलेगा

-अमित राय

जगत प्रवाह. वाराणसी। श्री काशी विश्वनाथ धाम में आगजनी की छोटी घटनाओं पर तेजी से काबू पाने के लिए ऑल टेरेन व्हीकल (एटीवी) का इस्तेमाल किया जाएगा। यह वाहन पहले प्रयागराज के महाकुंभ में रेत में आग बुझाने के लिए खरीदा गया था। अब इसे कमिश्नरेट के अग्निशमन विभाग को सौंप दिया गया है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी आनंद सिंह राजपूत ने बताया कि श्री काशी विश्वनाथ धाम में पहले से ही अत्याधुनिक अग्निशमन व्यवस्था मौजूद है, लेकिन संकरी गलियों और कठिन रास्तों तक तेजी से पहुंचने के लिए एटीवी का इस्तेमाल किया जाएगा। यह वाहन रेत, दलदल और पानी में आसानी से चल सकता है, जिससे किसी भी स्थान पर फायर ब्रिगेड की सहायता से पहले आग पर नियंत्रण पाया जा सकेगा।

एटीवी की खासियत

इस वाहन में नौ-नौ लीटर क्षमता वाले तीन सिलिंडर लगे हैं, जिनमें पानी और फोम भरा रहता है। इसके अलावा, इसमें दो फायर एक्सटिंग्विशर और अन्य अग्निशमन उपकरण भी मौजूद हैं। इसकी कॉम्पैक्ट डिजाइन और मजबूत बनावट इसे तंग गलियों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में उपयोग के लिए उपयुक्त बनाती है। श्री काशी विश्वनाथ धाम में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रहती है, ऐसे में किसी भी आपात स्थिति में एटीवी त्वरित राहत प्रदान करेगा। इसकी तैनाती से सुरक्षा व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी, जिससे किसी भी अग्निकांड को शुरुआती स्तर पर ही नियंत्रित किया जा सकेगा।

मध्यप्रदेश में
युवाओं का कल
हो रहा उज्ज्वल

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

89710 मेधावी विद्यार्थियों को
₹224 करोड़ की
लैपटॉप
राशि अंतरित

अब तक 4.32 लाख से अधिक विद्यार्थियों को
लैपटॉप के लिए ₹1 हजार करोड़ से
अधिक राशि अंतरित

RO No : D 19006/25

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)